सं. श्री वि /श्रम्बाला / 5-84 / 7009. चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. कोग्रापरेटिव केडिट एण्ड सर्विस सोसाईटी, सुनारियां, ज़िला कुरुक्षेत्र, केश्रमिक श्री प्रेम नाथ तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रीद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947, की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदाने की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं० 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रिधसूचना सं० 11495-जी-अम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिधिनियम की धारा 7 के अत्रीत गठित अम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवाद ग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रिमिक के बीच या तो विवाद ग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है :--

क्या श्री प्रेम नाथ की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं औ वि./श्रम्वालां/9-84/7015.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं मार्डन एक्स सर्विस मैन इन्जी-नियरिन्न कम्पनी, 208 एन्छीलरी इन्डस्ट्रीयल इस्टेट, पंचकुल (श्रम्बाला), के श्रमिक श्री राजेन्द्र पाल तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चं कि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिणय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, ग्रव, श्रीद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्याल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिश्चित्वता सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फर्चरी, 1958 द्वारा उन्त ग्रिधिनियम की घारा 7 के श्रीत गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनगंब के लिए निर्दिण्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रयवा सम्बन्धित मामला है:---

क्या श्री राजेन्द्र पाल की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

संग्री वि /एफ डी /2-84/7021. — चूंकि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मैं० के० आर० ग्रलीए प्रा० लि०, गांव कैली वल्लवगढ़, के श्रमिक श्री रामजी लाल तथा उसके प्रबंधकों के मध्म इसमें इसके वाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई भौदोगिक विवाद है :

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतृ निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, श्रीद्योगिक विवाद श्रविनियम, 1947 की धारा 10 को उपन्नारा (1) के खंड (घ) द्वारा प्रदान की गई। शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य परकार द्वारा उक्त श्रविनियम की धारा 7(क) के भ्रवीन भ्रीद्योगिक श्रिष्ठकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिदिष्ट विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले, श्रमिक सथा प्रवन्धकों के मध्य न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं :—

क्या श्री रामजी लाल की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो व**ह किस राहत का** हकदार है ?

सं. ग्री.वि./एफ.डो./4-84/7028 — चूं कि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मैं० दो हरियाणा स्टेट फैंडरेशन ग्राफ कम्जूमर्ज-कोग्रप्रेटिव हौलसैल स्टोर्ज लि०, चण्डीगढ़, के श्रीमिक श्री राम सरूप शर्मा तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रीडोगिक विवाद है;

श्रीर चूं कि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निदिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसिलए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रिविनियम, 1947, की बारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त श्रिविनियम की धारा 7(क) के ग्रधीन श्रीद्योगिक ग्रधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे बिनिर्दिष्ट विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले श्रमिक तथा प्रवत्यकों के मध्य न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं :---

क्या श्री राम सरूप शर्मा की सेवाझों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. म्रो.वि./एफ.डी./3.84/7035.—चूंकि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मैं० एम.एम. पौली पैकिंग प्रा० लि०, 20/4, मथुरा रोड़, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री जगदीश सिंह रावत तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई म्रोद्यौगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णर्थ हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, श्रव, श्रीद्योगिक विवाद श्रिष्ठिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त श्रिष्ठिनियम की धारा 7(क) के श्रधीन श्रीद्योगिक श्रिष्ठिकरण, हरियाणा, फरीदावाद, को नीचे वितिर्दिष्ट विवादग्रस्त या इससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले श्रीमक तथा प्रवन्धकों के मध्य न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री जगदीश सिंह रावत की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं.श्रो.वि./हिसार/106-83/7042.—-चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. हरियाणा स्टट फेंडरेशन आफ कन्जूमर को-श्राप्रेटिव होतसैल स्टोर्ज लि०, चण्डीगढ़, केश्रमिक श्री चान्वी राम तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु .निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, श्रव, श्रीद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधसूचना सं 9641—1—श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी श्रीधसूचना सं 3864—ए.एस.श्रो. (ई) श्रम 70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त श्रिधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:----

क्या श्री चान्दी राम की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. थ्रो.वि./भ्राई.डी./अम्बाला/2-84/7049.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि म० 1 हरियाणा राज्य विजली बोर्ड, चण्डीगढ़, 2. कार्यकारी अभियन्ता ( श्रोप्रेशन ), कन्सट्रेक्शन डिविजन एच. एस.ई.बी. माडल टाऊन, श्रम्बाला शहर के श्रीमिक श्री जी राम तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

धौर चूं कि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निविष्ट करना वाछनीय समझते है;

इसलिए, ग्रव, श्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवाद ग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद ग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित समला है:---

क्या श्री जी राम की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?